अध्याय 9

यहूदियों की विजय और उत्सव मनाना

एस्तेर 9 में, वह दिन आ गया जब राजा की आज्ञा को पूरा किया जाना था: "बारहवें महीने के तेरहवें दिन को।" सम्पूर्ण राज्य में और शूशन में यहूदियों ने अपने शत्रुओं पर बड़ी विजय प्राप्त की और अपने छुटकारे का उत्सव मनाया। एस्तेर और मोर्दकै के निर्देश पर यहूदियों का उत्सव राष्ट्रीय पर्व बन गया जो पूरीम पर्व कहलाया जिसे उसी समय से मनाया जाना आवश्यक था। इस विजय को, निःसन्देह, उनके द्वारा सौभाग्यपूर्ण माना गया: परमेश्वर ने उनके शत्रुओं से बदला लिया था और अपने लोगों को विजय दी थी।[1]

यहूदियों के शत्रुओं का विनाश (9:1-10)

1अदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन को, जिस दिन राजा की आज्ञा और नियम पूरे होने को थे, और यहूदियों के शत्रु उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे, परन्तु इसके विपरीत यहूदी अपने बैरियों पर प्रबल हुए; 2उस दिन यहूदी लोग राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में अपने अपने नगर में इकट्ठे हुए, कि जो उनकी हानि करने का यत्न करे, उन पर हाथ चलाएँ। कोई उनका सामना न कर सका, क्योंकि उनका भय देश देश के सब लोगों के मन में समा गया था। 3वरन् प्रान्तों के सब हाकिमों और अधिपतियों और प्रधानों और राजा के कर्मचारियों ने यहूदियों की सहायता की, क्योंकि उनके मन में मोर्दकै का भय समा गया था। 4मोर्दकै तो राजा के यहाँ बहुत प्रतिष्ठित था, और उसकी कीर्ति सब प्रान्तों में फैल गई; वरन् उस पुरुष मोर्दकै की महिमा बढ़ती चली गई। 5अत: यहूदियों ने अपने सब शत्रुओं को तलवार से मारकर और घात करके नष्ट कर डाला, और अपने बैरियों से अपनी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया। 6शूशन राजगढ़ में यहूदियों ने पाँच सौ मनुष्यों को घात करके नष्ट किया। 7उन्होंने पर्शन्दाता, दल्पोन, अस्पाता, 8पोराता, अदल्या, अरीदाता, 9पर्मशता, अरीसै, अरीदै और वैजाता, 10अर्थात् हम्मदाता के पुत्र यहूदियों के विरोधी हामान के दसों पुत्रों को भी घात किया; परन्तु उनके धन को न लूटा।

फ़ारसी साम्राज्य के सब प्रान्तों में अपने शत्रुओं पर यहूदियों की विजय का

वर्णन करने के द्वारा लेखक ने उस डरा देने वाले दिन का वर्णन आरम्भ किया। "अपने बैरियों" (9:1-5) के विरुद्ध यहूदियों के सफ़ल बचाव के एक सामान्य कथन के साथ यह वर्णन आरम्भ होता है। तब यह बताता है कि "शूशन राजगढ़ में" (9:6-10) में क्या घटित हुआ।

आयत 1. राजा ने दो अटल आज्ञाएँ पारित कीं और ये दोनों आज्ञाएँ **बारहवें महीने के तेरहवें दिन** (**अदार** नामक महीने अथवा फ़रवरी/मार्च) से जुड़ी हुई थीं। पहली, जो हामान के द्वारा लिखित थी, ने घोषणा की कि कोई भी व्यक्ति उस दिन यहूदियों पर आक्रमण कर सकता है उनको नष्ट कर सकता है और उन्हें मार सकता है (3:12, 13)। दूसरी आज्ञा एक परिशिष्ट के रूप में थी जो मोर्दकै के द्वारा तब उपलब्ध करवाई गई जब एस्तेर ने राजा को अवगत करवाया कि क्या हो रहा है। इस आज्ञा ने यह स्पष्ट किया कि निश्चित दिन यहूदी लोग अपने उन शत्रुओं पर आक्रमण करने, उनका विनाश करने और उन्हें मार डालने के द्वारा उनसे बदला ले सकते हैं जो उनका घात करने के प्रयास में थे (8:11, 12)।

जब वह दिन आया तब **राजा की** पहली **आज्ञा** पूरी होने पर थी। फिर भी, दूसरी आज्ञा के कारण **यहूदी** सफलतापूर्वक उन लोगों को पराजित कर पाए जो **उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे**। परिस्थितियाँ **इसके विपरीत** हो गईं; परमेश्वर के लोग पराजित होने के स्थान पर **अपने बैरियों पर प्रबल हुए**। आयत 1 के बाद के आधे भाग का अनुवाद NIV इस प्रकार करती है, "इस दिन यहूदियों के शत्रुओं ने उन पर प्रबल होने की आशा रखी परन्तु अब पासा पलट गया और यहूदी अपने बैरियों पर प्रबल हुए।"

आयत 2. यहूदियों की विजय ने उस समय स्थान प्राप्त किया जब वे फ़ारसी साम्राज्य के अपने अपने **नगर** में **इकट्ठे हुए**। "इकट्ठे हुए" इब्रानी क्रिया קָהַל (*कहल*) से आता है जिसका प्रयोग कभी एक सेना को एकत्रित करने के लिए किया जाता है। यह संकेत देता है कि **यहूदी** लोगों ने इकट्ठे होकर अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध किया। वे इकट्ठे हुए, **कि जो उनकी हानि करने का यत्न करे, उन पर हाथ चलाएँ** और वे ऐसा कर पाए। जो लोग यहूदियों को चोट पहुँचाना चाहते थे उन्हें छोड़ और किसी को कोई चोट नहीं पहुँची।[2] अपने आक्रमणकारियों के विरुद्ध परमेश्वर के लोगों का अटल और संयुक्त कदम इतना सफलतापूर्वक था कि **कोई उनका सामना न कर सका**। इस घटना के कारण सम्पूर्ण साम्राज्य में **उनका भय देश देश के सब लोगों के मन में समा गया**।

आयत 3. कम से कम एक भाग में **यहूदियों** ने विजय प्राप्त की क्योंकि पूरे राज्य में प्रान्तों के विभिन्न प्रधानों और शाही अधिकारियों के द्वारा उनकी **सहायता** (נָשָׂא, *नासा'*, "ऊपर उठाया गया") की गई। टीकाकार ऐसा मानते हैं कि प्रान्तों के प्रधानों ने सैन्य सहायता के साथ यहूदियों की सहायता की; अन्य दावा करते हैं कि उन्होंने मात्र नैतिक सहायता दी।[3] अन्य सम्भावना यह है कि उन्होंने यहूदी सेना के लिए अस्त्र शस्त्र उपलब्ध करवाए। वह **मोर्दकै का भय** अथवा "डर" (NIV) था जिससे इस प्रकार की संधि से सहायता प्राप्त की जा सकी।

आयत 4. मोर्दकै का भय इसलिए था क्योंकि वह अत्यधिक शक्तिशाली बन

चुका था। वर्ष के प्रथम महीने के किसी एक समय में प्रधान मंत्री के रूप में हामान का पदभार संभालने के बाद[4] तीसरे महीने में आज्ञा पारित करने के लिए वह ज़िम्मेदार रहा जिसने अन्ततः यहूदियों को बचा लिया (8:9)। इस समय तक राज्य में द्वितीय शक्तिशाली व्यक्ति के रूप में वह नौ अथवा दस महीने के लिए सेवा दे चुका था और उस समय का उपयोग उसने अच्छी प्रकार से करने में और **राजा के यहाँ बहुत प्रतिष्ठित** होते हुए अपनी पहचान बनाने में किया। जैसे जैसे **उसकी कीर्ति सब प्रान्तों में फैलती** चली गई वैसे वैसे उसकी **महिमा बढ़ती चली गई**।

आयत 5. लेखक ने यहूदियों की विजय के विषय में सामान्य कथन उन कारणों के प्रभावों को देकर किया जिनका उसने हाल ही में वर्णन किया था। यहूदी "इकट्ठे हुए" (9:2) इस कारण, प्रान्तों के अधिकारियों ने "सहायता की" (यहूदियों और मोर्दकै के भय के कारण; 9:3), और क्योंकि "कोई उनका सामना न कर सका" (9:2) इस कारण **यहूदियों ने अपने सब शत्रुओं को तलवार से मार डाला**। आज्ञाओं के कहने के अनुसार करने में वे अपने आक्रमणकारियों को **मारकर और घात करके नष्ट** कर रहे थे (देखें 3:13; 8:11)। उन्होंने **अपने बैरियों से अपनी इच्छा के अनुसार बर्ताव किया** अर्थात उनका कोई भी शत्रु उनके बदले के आगे टिक नहीं पाया। अन्य शब्दों में, उन्होंने अपने शत्रुओं को जैसा चाहा उसी प्रकार नष्ट किया।

इस प्रकट रक्तरंजित कार्य पर प्रायः प्रश्न खड़े किए गए हैं और इसकी निन्दा की गई है। स्मरण रखने योग्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यहूदी लोग अपने शत्रुओं पर बदले के रूप में आक्रमण कर रहे थे। उन्होंने मात्र उन लोगों का घात किया जो उनका संहार करना चाहते थे और उनकी सम्पत्ति लूट लेना चाहते थे।[5] जिस समय एक व्यक्ति यहूदियों के इस कार्य की आलोचना करता है ठीक इसी समय यह अपने लोगों के लिए परमेश्वर के द्वारा प्रमाणित सामान्य नीति प्रतिबिम्बित करता है: वे जातियाँ अथवा लोग जिन्होंने परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया (अथवा जो उनके शत्रु थे) उन्हें नष्ट किया जाना था और कभी कभी परमेश्वर ने किसी प्रकार के विनाश के लिए अपने लोगों का प्रयोग किया।

आयतें 6-10. तेरहवें दिन के घात के कुल परिणामों पर रिपोर्ट प्रदान करने से यह विवरण एक स्थान: शूशन नगर में, इसके परिणामों का एक विवरण देने की ओर बढ़ता है। आयत 6 **शूशन राजगढ़** के विषय में बताती है अर्थात वह राजगढ़ जहाँ पर राजाओं का महल स्थित था। यह माना गया है कि पाठ्य मात्र एक महल की ओर नहीं परन्तु सम्पूर्ण नगर की ओर संकेत कर रहा है।

यहूदियों ने पाँच सौ मनुष्यों को घात करके नष्ट किया (9:6) साथ ही **हामान के दसों पुत्रों को भी घात किया** (9:10) जिनका नाम इस पद में दिया गया है (9:7-9)। हामान के पुत्र क्यों मारे गए? यह माना जा सकता है कि वे यहूदियों के उन "शत्रुओं" के साथ थे जिन्होंने अदार के तेरहवें दिन को यहूदियों पर आक्रमण किया। एक व्यक्ति यह कल्पना कर सकता है कि किस प्रकार उनके पिता को फाँसी पर लटका दिए जाने और यहूदियों (एस्तेर और मोर्दकै) के द्वारा उनके पिता के अधिकारों से उन्हें वंचित किए जाने के बाद उन्होंने राजा की आज्ञा के

दिन उस घृणित पीढ़ी के विरुद्ध आक्रमण में अगुवाई देने के लिए योजना बनाई होगी।

हालांकि यहूदियों को यह अधिकार दिया गया कि वे “उनकी धन सम्पत्ति लूट लें” (8:11) फिर भी यहूदियों ने **उनके धन को न लूटा** (9:10)। क्यों? हालांकि पाठ्य ऐसा नहीं बताता परन्तु उपयुक्त रूप से उन्होंने उनके द्वारा पीड़ितों की वस्तुओं से इनकार किया जिससे अन्य लोग समझ जाएँ कि वे उनका घात मात्र अपना जीवन बचाने के लिए कर रहे थे और वे अन्य लोगों के मूल्य पर धनवान बनने का प्रयास नहीं कर रहे थे।

शूशन में प्रतिशोध का दूसरा दिन (9:11-15)

[11]उसी दिन शूशन राजगढ़ में घात किए हुओं की गिनती राजा को सुनाई गई। [12]तब राजा ने एस्तेर रानी से कहा, “यहूदियों ने शूशन राजगढ़ ही में पाँच सौ मनुष्यों और हामान के दसों पुत्रों को भी घात करके नष्ट किया है; फिर राज्य के अन्य प्रान्तों में उन्होंने न जाने क्या क्या किया होगा! अब इससे अधिक तेरा निवेदन क्या है? वह भी पूरा किया जाएगा। तू क्या माँगती है? वह भी तुझे दिया जाएगा।” [13]एस्तेर ने कहा, “यदि राजा को स्वीकार हो तो शूशन के यहूदियों को आज के समान कल भी करने की आज्ञा दी जाए, और हामान के दसों पुत्र फाँसी के खम्भों पर लटकाए जाएँ।” [14]राजा ने कहा, “ऐसा ही किया जाए;” यह आज्ञा शूशन में दी गई, और हामान के दसों पुत्र लटकाए गए। [15]शूशन के यहूदियों ने अदार महीने के चौदहवें दिन को भी इकट्ठे होकर शूशन में तीन सौ पुरुषों को घात किया, परन्तु धन को न लूटा।

एस्तेर के निवेदन पर राजा ने शूशन में दूसरे दिन यहूदियों को स्वीकृति दी कि वे साम्राज्य के राजधानी नगर में अपने शत्रुओं का घात कर सकें।

आयतें 11, 12. महीने के तेरहवें **दिन** के अन्त में **शूशन** में **यहूदियों** के द्वारा घात किए गए लोगों की **गिनती** की रिपोर्ट **राजा** को दी गई: **पाँच सौ मनुष्यों** और **हामान के दसों पुत्रों** का घात किया जाना। उसने यह सूचना **एस्तेर** तक पहुँचायी जिसमें अपना विचार जोड़ा कि शूशन में घात किए गए लोगों की संख्या सम्पूर्ण साम्राज्य में यहूदियों के लिए एक सामर्थी विजय को प्रतिबिम्बित कर रही है। तब कहानी के आरम्भ में एस्तेर के प्रति अपनी उदार मनोदशा में बने रहते हुए उसने पूछा कि अगर आगे कुछ और ऐसा हो जो वह अपने लिए राजा से करवाना चाहती हो तो बताए। राजा के शब्द उसी समान थे जैसे उसने पहले सुने थे: **“अब इससे अधिक तेरा निवेदन क्या है?”** और **“तू क्या माँगती है?”** पूर्व के समान राजा ने विश्वास दिलाया कि वह जो भी निवेदन करेगी उसके अनुसार वह करेगा।

आयतें 13, 14. एस्तेर ने तब क्षयर्ष से दो बातों के लिए निवेदन किया: (1) **शूशन में** अपने शत्रुओं से निपटने के लिए **यहूदियों** को एक अतिरिक्त दिन की प्राप्ति के लिए स्वीकृति प्राप्त हो और (2) **हामान के दसों पुत्र फाँसी के खम्भों पर**

लटकाए जाएँ। जैसा उसने पूर्व में चार उपवाक्यों का प्रयोग किया उस प्रकार नहीं (8:5)[6] परन्तु मात्र एक उपवाक्य के साथ (**"यदि राजा को स्वीकार हो"**) इस निवेदन का प्राक्कथन प्रस्तुत किया। इस परिवर्तन ने संकेत दिया कि जब एस्तेर स्थिरता के साथ आदरणीय थी इसी के साथ उसने स्वयं को और भी आत्मविश्वासी महसूस किया कि राजा उसके कहने के अनुसार करेगा। राजा के सिंहासन कक्ष के सम्मुख पहली बार उपस्थित होने के महीनों से उसने राजा के स्नेह को बनाए रखा और रानी के रूप में अपना पद दृढ़ किया। वह स्वयं एक आधिकारिक व्यक्ति बन गई।

एस्तेर के द्वारा किए गए इन निवेदनों का कारण दिया नहीं गया है। वास्तव में, अत्यधिक रक्त बहाने के लिए उसकी आलोचना की गई। शायद उसके पास ऐसी सूचना थी जो अन्य लोगों के पास उपलब्ध नहीं थी जो यह संकेत देती थी कि उस दिन बड़ी संख्या में यहूदियों के शत्रु बच निकले थे परन्तु दूसरे दिन आक्रमण करने की योजना बना रहे थे। अगर ऐसा है तो यह आवश्यक रहा होगा कि विरोधियों के इन समूहों को नष्ट कर दिया जाए। सम्भावित रूप से एस्तेर चाहती थी कि हामान के पुत्र फाँसी के खम्भों पर "लटकाए" जाएँ - अर्थात, उनके मृत शरीरों को "खम्भों पर" दिखाया जाए - जिससे सर्वसाधारण में जाना जा सके कि यहूदियों का बड़ा शत्रु हामान पराजित किया जा चुका है। इस प्रकार सब लोग देख सके कि जो कोई परमेश्वर के लोगों को नष्ट करने की खोज करता है उनके साथ क्या होगा। अगर यह सटीक है तो हामान के पुत्रों का लज्जापूर्ण प्रस्तुतिकरण डराकर रोकने वाला एक निवारण था और "[एस्तेर की] प्रतिशोध की प्राणघातक आत्मा का मामला नहीं था जो मृत्यु के बाद भी उनका पीछा कर रही थी।"[7]

राजा ने एस्तेर के निवेदनों को स्वीकार किया। शूशन में अपने शत्रुओं को नष्ट करने के लिए उसने यहूदियों को एक अतिरिक्त दिन प्रदान करते हुए एक और **आज्ञा** पारित की और उसने **हामान के दसों पुत्र फाँसी के खम्भों पर** लटकाने के आदेश दिए।

आयत 15. शूशन के यहूदियों ने अदार महीने के चौदहवें दिन को भी इकट्ठे होकर **शूशन में** [अन्य] **तीन सौ पुरुषों को घात किया**। साथ ही हामान के पुत्र फाँसी के खम्भों पर लटका दिए गए; अर्थात उनके मृत शरीर जनसाधारण के बीच घृणा और दृश्यमान सहायक वस्तु के रूप में प्रस्तुत किए गए जिससे जनसमूहों को सिखाया जा सके कि वे यहूदियों के विरुद्ध न लड़ें। पिछले दिन के समान, यहूदियों ने जिन लोगों का घात किया उनकी सम्पत्ति को लूटने से स्वयं को रोके रखा।

यहूदियों के द्वारा अपनी विजय का उत्सव मनाना (9:16-19)

16राज्य के अन्य प्रान्तों के यहूदी इकट्ठा होकर अपना अपना प्राण बचाने के लिये खड़े हुए, और अपने बैरियों में से पचहत्तर हज़ार मनुष्यों को घात करके अपने शत्रुओं से विश्राम पाया; परन्तु धन को न लूटा। 17यह अदार महीने के तेरहवें दिन को किया गया, और चौदहवें दिन को उन्होंने विश्राम करके भोज

किया और आनन्द का दिन ठहराया। [18]परन्तु शूशन के यहूदी अदार महीने के तेरहवें दिन को, और उसी महीने के चौदहवें दिन को इकट्ठा हुए, और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को उन्होंने विश्राम करके भोज का और आनन्द का दिन ठहराया। [19]इस कारण देहाती यहूदी जो बिना शहरपनाह की बस्तियों में रहते हैं, वे अदार महीने के चौदहवें दिन को आनन्द और भोज और खुशी और आपस में भोजन सामग्री भेजने का दिन नियुक्त करके मानते हैं।

यहूदियों ने अपने शत्रुओं का घात करने के बाद अपनी महान विजय का उत्सव मनाया।

आयत 16. शूशन और **अन्य प्रान्तों के यहूदी** लोगों के द्वारा उत्सव मनाने के बीच अन्तर बताने के लिए लेखक ने संक्षेप में बताया कि शेष साम्राज्य में क्या और कब हुआ। जिस समय शूशन के यहूदियों ने आठ सौ शत्रुओं का घात किया (9:12, 15) उसी समान अन्य प्रान्तों के यहूदियों ने **पचहत्तर हज़ार** को मार गिराया! शूशन के यहूदियों को दो दिन दिए गए जिससे वे अपने विरोधियों को नष्ट कर सकें जबकि अन्य स्थानों के यहूदियों ने मात्र एक दिन अर्थात महीने के तेरहवें दिन ही **अपने बैरियों** को नष्ट कर दिया। फिर भी, शूशन के यहूदियों के समान अन्य प्रान्तों के यहूदियों ने **धन को न लूटा**।

बड़ी संख्या में लोगों के घात किए जाने की रिपोर्ट के कारण कुछ लोग इस विवरण के ऐतिहासिक होने पर सन्देह करते हैं। एफ़. बी. ह्युई, जूनियर, ने तर्क दिया कि "बड़े समूहों में लोगों का घात किया जाना सामान्य रूप से इतिहास में देखा जा सकता है," और उसने अनेक ऐसे उदाहरण दिए हैं जब हज़ारों की संख्या में लोग मारे गए।[8] यहूदियों के द्वारा अपने शत्रुओं के घात की सूचना सांसारिक इतिहासकारों के द्वारा क्यों नहीं दी गई है? सम्पूर्ण साम्राज्य में अलग अलग स्थान में मृत्यु देखी गई और शायद उन दिनों में बड़ी संख्या में लोगों का घात किया जाना कोई विशेष बात नहीं थी। संख्याओं को जानबूझकर अत्यधिक रूप में देखने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी LXX में दी गई संख्या विशेष रूप में कम है: पन्द्रह हज़ार। यह शायद संकेत देगी कि LXX अनुवादकों ने पचहत्तर हज़ार की संख्या में एक पाठ्य सम्बन्धी समस्या देखी।

आयतें 17, 18. विरोधों के अन्य दिन, उत्सव मनाने के लिए अन्य दिनों की ओर लेकर चले। प्रान्तों में **तेरहवें दिन** विजय देखी गई इस कारण **चौदहवें दिन को** यहूदियों ने **विश्राम** किया और आनन्द मनाया। **शूशन** में **यहूदी** लोगों ने **तेरहवें दिन को, और उसी महीने के चौदहवें दिन को** विजय प्राप्त की और **पन्द्रहवें दिन को** उन्होंने **विश्राम** किया और आनन्द मनाया। दोनों मामलों में उत्सव मनाए जाने में **भोज का और आनन्द** का सम्मिलन था।

आयत 19. लेखक ने यह बताने के लिए इन तथ्यों को प्रस्तुत किया कि **बिना शहरपनाह की बस्तियों में** रहने वाले **यहूदी** लोगों ने **महीने के चौदहवें दिन को** उत्सव क्यों मनाया। इसके पीछे का अर्थ यह था कि मूल रूप से नगरों में रहने वाले यहूदियों ने और **देहाती** यहूदियों ने अलग अलग दिनों में यहूदियों के छुटकारे का

उत्सव मनाया और वह रीति निरन्तर जारी रही। कुछ समय तक इसी अभ्यास के अनुसार किया गया जो एस्तेर की पुस्तक के लिखे जाने के दिनों तक जारी रहा। मोर्दकै और एस्तेर की आज्ञाओं के द्वारा जो ऊपरी तौर से परमेश्वर के लोगों की विजय के एक स्वैच्छिक उत्सव के रूप में आरम्भ हो गया था वह पूरीम पर्व के रूप में एक वार्षिक अवकाश कहलाया।

पूरीम पर्व स्थापित किया गया (9:20-32)

**20इन बातों का वृत्तान्त लिखकर, मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में,
क्या निकट क्या दूर रहनेवाले सारे यहूदियों के पास चिट्ठियाँ भेजीं, 21और यह
आज्ञा दी, कि अदार महीने के चौदहवें और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को प्रति
वर्ष माना करें। 22जिन में यहूदियों ने अपने शत्रुओं से विश्राम पाया, और यह
महीना जिस में शोक आनन्द से, और विलाप खुशी से बदला गया; (माना करें)
और उनको जेवनार और आनन्द और एक दूसरे के पास भोजन सामग्री भेजने
और कंगालों को दान देने के दिन मानें। 23अत: यहूदियों ने जैसा आरम्भ किया
था, और जैसा मोर्दकै ने उन्हें लिखा, वैसा ही करने का निश्चय कर लिया।
24क्योंकि हम्मदाता अगागी का पुत्र हामान जो सब यहूदियों का विरोधी था,
उसने यहूदियों का नाश करने की युक्ति की, और उन्हें मिटा डालने और नष्ट
करने के लिये पूर अर्थात् चिट्ठी डाली थी। 25परन्तु जब राजा ने यह जान लिया,
तब उसने आज्ञा दी और लिखवाई कि जो दुष्ट युक्ति हामान ने यहूदियों के विरुद्ध
की थी वह उसी के सिर पर पलट आए, तब वह और उसके पुत्र फाँसी के खम्भों
पर लटकाए गए। 26इस कारण उन दिनों का नाम पूर शब्द से पूरीम रखा गया।
इस चिट्ठी की सब बातों के कारण, और जो कुछ उन्होंने इस विषय में देखा और
जो कुछ उन पर बीता था, उसके कारण भी 27यहूदियों ने अपने अपने लिये और
अपनी सन्तान के लिये, और उन सभों के लिये भी जो उनमें मिल गए थे यह
अटल प्रण किया, कि उस लेख के अनुसार प्रति वर्ष उसके ठहराए हुए समय में
वे ये दो दिन मानें; 28और पीढ़ी पीढ़ी, कुल कुल, प्रान्त प्रान्त, नगर नगर में ये
दिन स्मरण किए और माने जाएँगे, और पूरीम नाम के दिन यहूदियों में कभी न
मिटेंगे और उनका स्मरण उनके वंश से जाता न रहेगा। 29फिर अबीहैल की बेटी
एस्तेर रानी, और मोर्दकै यहूदी ने पूरीम के विषय यह दूसरी चिट्ठी बड़े अधिकार
के साथ लिखी। 30इसकी नकलें मोर्दकै ने क्षयर्ष के राज्य के एक सौ सत्ताईसों
प्रान्तों के सब यहूदियों के पास शान्ति देनेवाली और सच्ची बातों के साथ इस
आशय से भेजीं, 31कि पूरीम के उन दिनों के विशेष ठहराए हुए समयों में मोर्दकै
यहूदी और एस्तेर रानी की आज्ञा के अनुसार, और जो यहूदियों ने अपने और
अपनी सन्तान के लिये ठान लिया था, उसके अनुसार भी उपवास और विलाप
किए जाएँ। 32पूरीम के विषय का यह नियम एस्तेर की आज्ञा से भी स्थिर किया
गया, और उनकी चर्चा पुस्तक में लिखी गई।**

आयतें 20, 21. यहूदियों की विजय और उत्सव के बाद **इन बातों का वृत्तान्त लिखकर, मोर्दकै ने** सम्पूर्ण साम्राज्य में **सारे यहूदियों के पास चिट्ठियाँ** - अर्थात एक ही चिट्ठी की प्रतियाँ - **भेजीं**। कुछ लोगों का सोचना है कि मोर्दकै के द्वारा "इन बातों" का वृत्तान्त लिखना यह संकेत देता है कि वह एस्तेर की पुस्तक का लेखक है परन्तु यह अनुपयुक्त जान पड़ता है कि यह सन्दर्भ सम्पूर्ण पुस्तक के विषय में है।

मोर्दकै की आज्ञा ने यहूदियों से अपेक्षा रखी कि वे प्रत्येक वर्ष **महीने के चौदहवें** और **पन्द्रहवें दिन को** मानते हुए जीत के इन दिनों को मनाएँ। माइकल वी. फॉक्स ने एक वैकल्पिक विचार उपलब्ध करवाया जिसमें उसने दावा किया कि मोर्दकै की मनसा यह थी "कि प्रत्येक स्थान के लोग एक दिन मनाएँ जबकि सम्पूर्ण में लोगों को इस प्रकार देखा जाता था कि वे दोनों दिन मना रहे हैं।"[9]

आयत 22. उनके द्वारा आनन्द मनाने का कारण स्पष्टता के साथ दिया हुआ है: **यहूदियों ने अपने शत्रुओं से विश्राम पाया** [था]। "विश्राम पाया," נוּחַ (*नुआख*), से है और इसका अनुवाद अक्षरशः "से विश्राम पाया" (NKJV) अथवा "से राहत पायी" (NIV) के रूप में किया जा सकता है। वह **महीना** जो शोक के लिए चिन्हित किया गया वह एक महीने में परिवर्तित हो गया जिसे आनन्द के रूप में चरितार्थ किया गया है; इसमें **शोक आनन्द से, और विलाप खुशी से बदला गया**। मोर्दकै ने कहा कि वे एक दूसरे को दान देने और भलाई के काम करते हुए इस दिन को **जेवनार और आनन्द** के साथ मनाएँ।

आयत 23. यहूदियों ने सकारात्मकता के साथ इस निर्देशन का पालन किया और ठीक वैसा ही किया **जैसा मोर्दकै ने उन्हें लिखा**। वास्तव में, वे मात्र उसी अनुसार करते रहे जैसा वे करते आ रहे थे (उन्होंने **जैसा आरम्भ किया था, वैसा ही करने का निश्चय कर लिया**)। वे जिन रीतियों के अनुसार करते आ रहे थे उन्हें मोर्दकै की चिट्ठी ने दोनों दिनों के लिए लागू करते हुए प्रमाणित कर किया। आयत 21 में, "आज्ञा दी" अथवा "स्थापित करना" (NKJV) इब्रानी शब्द קוּם (*कम*) से है जिसका अन्य स्थान में, "'आज्ञा, माँग' [देखें 9:27, 31; रूत 4:7; भजन संहिता 119:106; यहेजकेल 13:6][10] के स्थान पर "अर्थ है 'सुदृढ़ करना' अथवा 'प्रमाणित करना।'"

आयतें 24, 25. लेखक ने तब उस पर्व के नाम के लिए एक विवरण शामिल किया जिसे यहूदी मना रहे थे। वह शायद ठीक वे ही शब्द काम में ले रहा होगा जो मोर्दकै ने उस चिट्ठी में लिखे जो उसने सब यहूदियों को भेजी थी।[11] उसने सबसे पहले यहूदियों के प्रति धमकी को संक्षिप्त किया। **हामान** जो सब यहूदियों का विरोधी था **उसने** सब **यहूदियों का नाश करने की युक्ति की**। उसकी योजना में, **उन्हें मिटा डालने और नष्ट करने के लिये पूर अर्थात् चिट्ठी** का प्रयोग करना शामिल था जिससे चिट्ठी डालने के द्वारा वह दिन निश्चित किया जाए जब यहूदियों का घात किया जा सके (3:6, 7)।

फिर भी, यहूदी बचा लिए गए क्योंकि हामान की योजना को **राजा ने जान लिया** (7:3-6)। क्षयर्ष ने आज्ञा दी **और लिखवाई कि जो दुष्ट युक्ति हामान ने ... की थी वह उसी के सिर पर पलट आए, तब वह और उसके पुत्र फाँसी के**

खम्भों पर लटकाए गए (7:8-10; 9:6-10, 14)।

इस विवरण और पुस्तक के आरम्भ में पायी जाने वाली सूचना के बीच कुछ अन्तर ध्यान देने योग्य हैं। यह सघन संस्करण आरम्भ के विवरण की तुलना में राजा को अधिक श्रेय देता है। वाक्य खंड "जब राजा ने यह जान लिया" ने कुशलता के साथ इस तथ्य को छोड़ दिया कि यहूदियों को नष्ट करने की आज्ञा भी राजा के नाम में पारित की गई थी। इसी समान इसने यह भी छोड़ दिया कि अगर एस्तेर (मोर्दकै से प्रोत्साहित होने के द्वारा) राजा के सम्मुख जाने का साहस नहीं करती तो यह मामला "राजा की जानकारी" में नहीं आता। साथ ही, यहूदियों को मिटा डालने और नष्ट करने का मात्र कारण "चिट्ठी" का डाला जाना नहीं था परन्तु इसने मात्र वह दिन निश्चित किया जिस दिन उन पर आक्रमण किया जाना था। ऐसा कहा जा सकता है कि अब तक वह योजना इस गति के साथ थी कि उनका घात किया जा सके। आगे, जैसा कि यह सच है कि राजा ने हामान और उसके पुत्रों को फाँसी पर लटका दिया, उनका लटकाया जाना एक समान समय में नहीं हुआ। यहूदियों के विरुद्ध आज्ञा, पूरी तरह से हामान को फाँसी पर लटकाने का कारण नहीं थी; इसकी आज्ञा दी गई क्योंकि यह महसूस किया गया कि वह रानी से बरबस करना चाहता है। ये अन्तर दो अनुमानों के साथ समझाए जा सकते हैं: (1) लेखक कहानी का एक सटीक परन्तु अपूर्ण सारांश दे रहा था जिसमें वह उतनी ही जानकारी दे रहा था जो उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक थी। (2) यह मोर्दकै (और यहूदियों) की श्रेष्ठ रुचि के अन्तर्गत था कि जितना सम्भव हो उतना राजा को अच्छा दिखाया जा सके[12] (और यहूदियों के बचाव में स्वयं मोर्दकै की भूमिका के किसी भी प्रकार के वर्णन को छोड़ा जा सके)।

आयतें 26, 27. ऊपरी तौर पर लेखक ने मोर्दकै की **चिट्ठी** में पाए जाने वाले विवरण को अलग रखते हुए बताया कि **उन दिनों** को (अदार महीने के चौदहवें और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को; 9:21) **पूरीम** कहा गया। यह **नाम पूर** का प्रभाव प्रतिबिम्बित करता है जिसका डाला जाना हामान के द्वारा हुआ (3:7)। इब्रानी में פּוּר (*पुर*) का बहुवचन रूप פּוּרִים (*पूरीम*) है।

मौर्दकै की चिट्ठी ने यहूदियों की व्यक्तिगत इच्छा को सुदृढ़ किया जिससे वे अपने छुटकारे का उत्सव मना सकें। **जो कुछ उन्होंने इस विषय में देखा और जो कुछ उन पर बीता था** उस अनुभव को वे कभी भूल नहीं सकते थे। फिर भी यहूदियों के लिए मोर्दकै की चिट्ठी ने **यह अटल प्रण किया, कि ... ठहराए हुए समय में** वे स्मरण पर्व के रूप में इस पर्व को मनाएँगे। उन लोगों ने, जो उनमें मिल गए थे उनके साथ इस प्रकार स्थापित किया कि **प्रति वर्ष ... वे ये दो दिन मानें**।

वाक्यांश **जो उनमें मिल गए थे** यहूदी मत धारण करने वाले लोगों का संकेत देता है (8:16, 17 पर टिप्पणियाँ देखें)। यह भी सम्भव है कि कुछ अन्यजाति लोगों ने यहूदी मत धारण किए बिना ही यहूदियों का विश्वास स्वीकार किया और उनमें मिल गए; इस प्रकार के लोग बाद में "परमेश्वर का भय रखने वाले" कहलाए।

यह पुस्तक, इस कारण इतिहास उपलब्ध करवाती है कि पूरीम पर्व किस प्रकार आरम्भ हुआ। जिस समय सम्भावित रूप से इस पुस्तक का प्राथमिक उद्देश्य

इस मनसा की पूर्ति के लिए नहीं था ठीक उसी समय निश्चित रूप से यह एक उद्देश्य था जिसकी पूर्ति यह करती है। पुस्तक के अन्तिम भाग में "आगे घटित हुई कहानी उस पर्व को मनाने के लिए समर्थन देने के बल के साथ सुनाई गयी है जिसके लिए पुराने नियम की व्यवस्था में कोई आज्ञा नहीं दी गई थी और इसका नाम पुस्तक में रिकॉर्ड की गई घटनाओं के साथ जुड़ा हुआ है।" चूँकि पूरीम, बाइबल के कैनन से अधिकार प्राप्त नहीं है, "इसे मोर्दकै और एस्तेर की संयुक्त चिट्ठी के द्वारा प्रमाणित किया गया जिनमें से दोनों अपने अपने स्थान में अधिकार प्राप्त थे अर्थात एक वह जो क्षयर्ष के 'अधिकार और सामर्थ्य' के साथ सम्बन्ध रखता था और एक वह जो रानी के रूप में अपना जुड़ाव रखती थी।"[13]

आयत 28. आगे पर्व के विषय में एक आज्ञा पारित की गई। (ऊपरी तौर पर, लेखक फिर से मोर्दकै के शब्दों का उद्धरण कर रहा था।) सारे **यहूदियों** के लिए, चाहे वे जहाँ भी रहते हों, चाहे वे किसी भी **कुल** से सम्बन्ध रखते हों, यह आवश्यक था कि सब समय के लिए सब स्थानों में यह पर्व मनाएँ। इस आज्ञा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि यहूदी निरन्तर **पूरीम** पर्व मनाएँ परन्तु इस पर्व का उद्देश्य यह विश्वास दिलाने के लिए था कि वे उन घटनाओं को भूल नहीं जाएँ जिनका स्मरण पूरीम करवाता था। ऐसा हो कि उनके छुटकारे के बारे में **उनका स्मरण उनके वंश से जाता न** रहे (זֶרַע, *ज़ीरा')* अथवा "वंश" (KJV)।

आयत 29. हालांकि **मोर्दकै** प्रधान मंत्री था और वह राजा की अँगूठी से एक आज्ञा पर हस्ताक्षर कर सकता था फिर भी उसकी चिट्ठी **एस्तेर रानी** के द्वारा प्रमाणित हस्ताक्षर के द्वारा अधिकार प्राप्त थी। स्वयं के शाही **अधिकार** में जोड़ प्रदान करने के कारण **पूरीम** के विषय में दी गई आज्ञा के महत्व और स्थायी विधि को बल मिला।

इस विधि को प्रमाणित करने के लिए लिखित **दूसरी चिट्ठी** का अर्थ क्या है यह निश्चित नहीं है। शायद यह 9:30, 31 में दिए वर्णन का प्रत्युत्तर है। यह एक निवेदन पत्र अथवा विवरणात्मक नोट रही होगी जो मोर्दकै की आज्ञा के साथ शामिल कर ली गई।

आयतें 30, 31. राज्य के एक सौ सत्ताईस प्रान्तों के पास चिट्ठी की नकलें इस चाह के साथ भेजी गईं कि इसके प्राप्तकर्ताओं के लिए यह शान्ति देनेवाली और सच्ची बातों के साथ हो। यह दस्तावेज इसलिए वितरित किया गया कि यहूदियों के मध्य पूरीम के उन दिनों के विशेष ठहराए हुए समयों के अनुसार किया जाए। इसने इस बात पर बल दिया कि यह आज्ञा इसलिए थी कि मोर्दकै यहूदी और एस्तेर रानी की आज्ञा के अनुसार किया जाए। आवश्यक रूप से, इसने उस पर्व को आधिकारिक बना दिया जिसे उन्होंने परमेश्वर के लोगों के संहार को पलट दिए जाने के बाद अपने छुटकारे को स्वैच्छिक रूप से मनाने के द्वारा अपने और अपनी सन्तान के लिये ठान लिया था। पूरीम के विषय की आज्ञा (דָּבָר, *डाबर*, "शब्द") को उसी प्रकार से माना जाना था जैसा पीढ़ियों से उपवास और विलाप के विषय में था। उनके द्वारा "उपवास और विलाप" का समय यरूशलेम के विनाश से जुड़ी हुई परम्परागत बातों को मनाने की ओर संकेत करता था (जकर्याह 7:5; 8:19)।

अन्य सुझाव यह है कि यह भाषा, 4:3, 16 के स्मरण में, पूरीम से पहले उपवास के एक समय की ओर संकेत करती है। चिट्ठी यह कह रही थी कि यहूदी परम्परा आनन्द और भोज (जो पूरीम के दिन किया जाता था) के साथ उपवास और विलाप को भी सम्मिलित करें।

आयत 32. पूरीम पर्व को स्थापित करने की कहानी इस कथन के साथ समाप्त होती है कि यह पर्व और इसके **नियम** [דָּבָר, *डाबर*, "शब्द"] **एस्तेर की आज्ञा से स्थिर** किए गए। साथ ही, यह आज्ञा **पुस्तक में लिखी गई**। यह किस पुस्तक में लिखी गई? इसके लिए सामान्य विवरण यह है कि एस्तेर के शब्द फ़ारस के आधिकारिक इतिहास में रिकॉर्ड किए गए। अन्य सम्भावना यह है कि "पुस्तक" एस्तेर के पाठ्य की ओर संकेत करती है जो स्वयं एक आधिकारिक या कम से कम एक अर्ध आधिकारिक रिकॉर्ड रहा होगा। शायद यह फ़ारसी लोगों के लाभ के लिए लिखी गई जिससे साम्राज्य में यहूदियों की भूमिका के बारे में बताया जा सके।

अनुप्रयोग

भूमिका में परिवर्तन (9:1)

NASB में, एस्तेर 9:1 कहती है कि "उस दिन जबकि यहूदियों के शत्रु उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे, *इसके विपरीत* यहूदी अपने बैरियों पर प्रबल हुए" (बल दिया गया है)। "इसके विपरीत," के स्थान पर ESV कहती है कि "इसका उल्टा हुआ" और NIV में लिखा है कि "बाज़ी पलट गई।"

भूमिकाएँ परिवर्तित हो गईं। अपने शत्रुओं के द्वारा पराजित किए जाने के स्थान पर यहूदी अपने शत्रुओं पर जय पाने वाले बन गए। लगभग इसी प्रकार, हामान जिसका पद राजा के द्वारा ऊँचा किया गया था वह अन्त में राजा के द्वारा फाँसी पर लटका दिया गया; और मोर्दकै, जो हामान की घृणा का लक्ष्य बिन्दु था उसने प्रधान मंत्री के रूप में हामान का स्थान ले लिया!

बाइबल में भूमिका में परिवर्तन के अन्य उदाहरण देखे जा सकते हैं। यूसुफ के भाई उससे घृणा करते थे और उन्होंने उसे गुलामी में बेच दिया परन्तु अन्त में उन्होंने उसे दण्डवत किया (उत्पत्ति 37:28; 42:6)। अपने भाइयों के द्वारा मूसा को "अस्वीकार" किया गया जिन्होंने कहा, "किसने तुझे [हम लोगों पर] हाकिम और न्यायी ठहराया?" परन्तु यह वही व्यक्ति था जिसे "परमेश्वर ने हाकिम और छुड़ानेवाला ठहराकर भेजा" (प्रेरितों 7:35; देखें निर्गमन 2:14; 3:10)। लूका 16:19-31 के अनुसार एक धनवान ने जीवन की अच्छी वस्तुओं का सुख उठाया और लाज़र नामक दरिद्र के पास कुछ भी नहीं था; परन्तु मृत्यु के बाद धनवान ने पीड़ा उठाई जबकि लाज़र को शान्ति मिली। यीशु ने सिखाया कि उसके चेलों की भूमिका में परिवर्तन किया जाएगा अर्थात जो शोक करते हैं वे शान्ति पाएँगे, नम्र पृथ्वी के अधिकारी होंगे, प्यासे तृप्त किए जाएँगे (मत्ती 5:4-6) और एक चेला जो अपना प्राण खोता है वह उसे पाएगा (मत्ती 16:25)।

प्रेरितों ने अन्य से बढ़कर भूमिका में सबसे बड़े परिवर्तन की घोषणा की: यीशु

को यहूदियों के द्वारा क्रूस पर चढ़ाया गया परन्तु वह मृतकों में से जिलाया गया और स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा महिमान्वित किया गया! पतरस ने कहा, "परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी" (प्रेरितों 2:36)। "जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और बहुमूल्य जीवता पत्थर है" (1 पतरस 2:4)। महिमा के मुकुट के स्थान पर उसने काँटों का मुकुट धारण किया और एक दिन वह, जिसका न्याय मनुष्यों के द्वारा किया गया वह सारी मानवजाति का न्याय करेगा।

वे लोग जो वर्तमान में स्वयं को त्यागा हुआ, दबाया हुआ अथवा सताया हुआ महसूस करते हैं उनके लिए यह सुसमाचार है कि किसी दिन ये भूमिकाएँ परिवर्तित हो जाएँगी। एस्तेर के दिन में यहूदियों के समान, संसार के द्वारा पराजित किए जाने के स्थान पर वे संसार को पराजित कर सकते हैं। मसीही होने के कारण हम यीशु मसीह के द्वारा "जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोमियों 8:37; KJV)। यह जानते हुए हम आनन्द मना सकते हैं कि "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है" (याकूब 4:6)। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है जब सामान्य दरिद्र लोगों ने यीशु से आनन्द के साथ सुना और प्रेरितों के सन्देश का प्रत्युत्तर सकारात्मक रूप में दिया!

"आनन्द का दिन" (9:19, 22)

यहूदियों ने अपने छुटकारे का उत्सव एक दिन के साथ मनाया जिसे "आनन्द और भोज और खुशी और आपस में भोजन सामग्री भेजने का दिन" कहा जाता है (9:19)। बाद में, उन्हें निर्देश दिए गए कि वे "जेवनार और आनन्द और एक दूसरे के पास भोजन सामग्री भेजने और कंगालों को दान देने के दिन मानें" (9:22)।

व्यवस्था के द्वारा पूरीम पर्व की माँग नहीं की गई परन्तु यह यहूदियों के बीच एक महत्वपूर्ण वार्षिक विशेष दिन बन गया। वास्तव में मसीही लोगों के लिए आवश्यक नहीं है कि वे इस पर्व को माने। नया नियम हमें आज्ञा नहीं देता कि हम यहूदी कैलेन्डर के किसी भी पर्व को मानें (देखें कुलु. 2:16, 17)। उन पर्वों के समान अन्तर में वर्तमान में हमारे लिए निकटतम "पर्व" वह है जिसे हम प्रत्येक सप्ताह के प्रथम दिन मानते हैं जब हम प्रभु भोज में भाग लेने के समय मसीह की मृत्यु का स्मरण करने के लिए एकत्रित होते हैं । उस अवसर पर हम मसीह की मृत्यु के द्वारा पाप से हमारे छुटकारे का स्मरण करते हैं और उसमें आनन्द मनाते हैं। हम ऐसा कह सकते हैं कि मसीही जीवन एक पर्व के समान है जिसका आनन्द हम मिलकर लेते हैं (मत्ती 22:2)। अपनी प्रसन्नता और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए हमें चाहिए कि हमारे पास जो कुछ है उसे एक दूसरे के साथ और विशेषकर दरिद्रों के साथ बाँटें (देखें प्रेरितों 2:44)। पौलुस ने मसीही लोगों को लिखा, "इसलिये जहाँ तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ" (गला. 6:10)।

“शोक आनन्द से बदला गया” (9:22)

एस्तेर 9:22 कहती है कि उन दिनों में, “जिन में यहूदियों ने अपने शत्रुओं से विश्राम पाया, और यह महीना जिस में शोक आनन्द से, और विलाप खुशी से बदला गया।” “शोक आनन्द से” बदल जाने का विचार हमें परमेश्वर के लोगों की निर्णायक विजय का स्मरण करवाता है। जब हम स्वर्ग जाएँगे तब परमेश्वर “[हमारी] आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।” (प्रका. 21:4)। यह जीवन दुख से भरा हुआ है परन्तु हम सब आगे आनन्द के एक दिन की ओर देखें। इस प्रकार का पूर्वानुमान एक भजन के इन शब्दों में प्रतिध्वनि देता है:

आनन्द की सुबह में,
आनन्द की सुबह में,
हम महिमा में एकत्रित कर लिए जाएँगे
आनन्द की सुबह में।[14]

यह सुनिश्चित करते हुए कि उनका स्मरण जाता न रहे (9:28)

यहूदियों से कहा गया कि वे पूरीम पर्व को निरन्तर मानें जिससे “उनका स्मरण [अर्थात जिसका प्रतिनिधित्व वह पर्व करता था] उनके वंश से जाता न रहे” (9:28)। उसी समान मसीही लोग भी प्रत्येक सप्ताह प्रभु की मेज़ का आयोजन करें जिससे यीशु ने हमारे लिए जो किया उसका स्मरण हमारे मनों से जाता न रहे। हमें निरन्तर वह स्मरण करने की आवश्यकता है जो यीशु ने हमारे लिए किया जिससे हम उसके प्रति अपने समर्पण को स्थिरता के साथ फिर से नया कर सकें। हम इस विचार को अपने बच्चों और उनके बच्चों को सिखाने की आवश्यकता के साथ भी लागू कर सकते हैं; हमें चाहिए कि हम प्रायः उन्हें परमेश्वर के वचन की महान सच्चाइयों का स्मरण दिलाएँ जिससे वे कभी भी न तो इन सच्चाइयों को भूलें और न ही इन्हें त्यागें (देखें व्यव. 6:6, 7)।

समाप्ति नोट्स

[1]जॉर्ज ए. एफ़. नाईट, *एस्तेर, नीतिवचन, विलापगीत*, टॉर्च बाइबल कमेन्ट्रीज़ (लंडन: SCM प्रेस, 1955), 45. देखें व्यवस्थाविवरण 32:35, 41, 43; यशायाह 34:8; 35:4; 61:2; 63:4; मीका 5:15; रोमियों 12:19. [2]एफ़. बी. ह्युई, जुनियर, के द्वारा प्रस्तुत विचार, “यहूदियों ने स्वयं को आत्म सुरक्षा तक ही सीमित नहीं रखा। उन्होंने उन लोगों की खोज की जो उन्हें हानि पहुँचा सकते थे और उन्हें नष्ट कर दिया” (एफ़. बी. ह्युई जुनियर, “एस्तेर,” इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रेंक ई. गेबलाइन [ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988], 833), के विपरीत यहूदियों ने मात्र स्वयं की सुरक्षा के लिए युद्ध किया। [3]जेम्स बर्टन कॉफ्फ़मेन एंड थेल्मा बी. कॉफ्फ़मेन, *कमेन्ट्री ओन एज्रा, नहेम्याह एंड एस्तेर* (अबिलीन, टेक्सस: ACU प्रेस, 1993), 316. [4]हामान की आज्ञा पहले महीने के मध्य में भेजी गई (3:12) और उसके कुछ ही समय बाद मोर्दकै शासन में आ गया (8:1, 2). [5]जोइस जी. बाल्डविन ने तर्क दिया, “इस युद्ध में हताहत हुए लोग एक तरफ़ हैं परन्तु हमें, एस्तेर पर लिखे गए लेखनों के विरुद्ध अनेक

कथनों के बाद भी, युद्ध करने वाले लोगों के सम्बन्ध में सोचना चाहिए और सम्पूर्ण में एक असुरक्षित जनसंख्या के सम्बन्ध में नहीं सोचना चाहिए" (जोइस जी. बाल्डविन, *एस्तेर*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1984], 104)। [6]इनकी तुलना, 5:4, 8; 7:3 में दिए गए अन्य निवेदनों के प्राक्कथनों के साथ करें। [7]कैरी ए. मूर, *एस्तेर*, द ऐंकर बाइबल, वोल. 7बी (न्यू योर्क: डबलडे एंड कम्पनी, 1971), 91. [8]ह्युई, 791-92. [9]माइकल वी. फ़ॉक्स, *कैरेक्टर एंड आइडियोलॉजी इन द बुक ऑफ़ एस्तेर*, 2न्ड एड. (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 117. [10]उपरोक्त, 118.

[11]ह्युई ने लिखा, "सम्भावित रूप से आयतें 24, 25 आयतों में यहूदियों को मोदकै के द्वारा लिखी गई चिट्ठी के तत्व शामिल हैं (सन्दर्भ के लिए देखें, 9:20, 23)" (ह्युई, 836)। [12]अगर यह छोटा विवरण राजा की खुशामद करता है तो इसका स्वर पुस्तक के शेष भाग के साथ भी वैसा ही है। [13]बी. एच. कैली, *एज़्रा टू अय्यूब*, द लेमैन्स बाइबल कमेन्ट्रीज़ (लंडन: SCM प्रेस, 1962), 49. [14]आर. ए. इविलसाइज़र, "इन द मोर्निंग ऑफ़ जॉय," *सोंग्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़*, कोम्पोज़िशन एंड एड. ऑल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोन्रो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कम्पनी, 1994)।